क्या तेल जल्दी ही खत्म होगा?

पिछले दिनों कच्चे तेल की कीमतें अपने रिकॉर्ड शिखर पर पहुंच गईं। कई विशेषज्ञों का अनुमान है कि इसका कारण यह है कि दुनिया के तेल भंडार चुकने की ओर अग्रसर हैं। कई लोग तो मानते हैं कि तेल का अधिकतम उत्पादन 2006 में हुआ था और अब यह घटता ही जाएगा। तेल उपलब्धता के इन सब निराशावादी अनुमानों के बीच एक आशावादी अनुमान भी सामने आया है।

तेल उद्योग के एक भूतपूर्व सलाहकार और यू.के. की रॉयल सोसायटी ऑफ केमेस्ट्री के प्रमुख कार्यकारी रिचर्ड पाइक का मत है कि तेल भंडारों की गणना में सांख्यिकीय त्रुटियों की वजह से तेल भंडार कम करके आंके जा रहे हैं।

आम तौर पर तेल कंपनियां यह देखती हैं कि पिछले वर्षों में कितना उत्पादन हुआ है। इसके आधार वे यह अनुमान लगाती हैं कि किस भंडार में कितना तेल होना चाहिए। इसका 90 प्रतिशत निश्चित माना जाता है। अब एक ग्राफ बनाया जाता है जिसका आकार उल्टी घंटी जैसा होता है। इससे पता चलता है कि कौन-सा भंडार कितने वर्षों में चुक जाएगा।

पाइक का कहना है कि गलती यहीं होती है। उनके अनुसार करना यह चाहिए कि सारे भंडारों के घंटी आकार के ग्राफ्स को जोड़कर पता लगाया जाना चाहिए कि दुनिया के तेल भंडारों में कितना तेल बचा है। मगर कंपनियां मात्र अंतिम आंकड़े को जोड़ देती हैं।

वैसे पाइक मानते हैं कि कंपनियों की आंतरिक रिपोर्ट्स में सही आंकड़े होते हैं मगर इन्हें वे सार्वजनिक नहीं करतीं। जैसे प्रकाशित रिपोर्ट्स के मुताबिक दुनिया के तेल स्रोतों से अभी 1200 अरब बैरल तेल निकाला जा सकता है। मगर पाइक का मत है कि यह आंकड़ा निरर्थक है और वास्तविक आंकड़ा इससे कम-से-कम दुगना होगा। ***(स्रोत फीचर्स)***